जब भारत भूषण ने अपनी पत्नी को ही मृत घोषित कर दिया



कोई हंसी-मजाक में झूठ बोले या मजबूरी में झूठ बोले या आदतन झूठ बोले, पर अगर मजाक में बोला हुआ वह झूठ सचमुच में बड़ा सच बन जाए, तो झूठ बोलने वाले पर क्या गुजरेगी, यह अपने जमाने में मशहूर अभिनेता भारत भूषण के साथ घटित एक घटना से पता चलता है. भारत भूषण ने 9 नवंबर 1941 को मुंबई से कलकत्ता अपने मकान मालिक को झूठ-मूठ का टेलीग्राम किया था–वाइफ एक्सपायर्ड, कमिंग एंड ऑफ दिस मंथ. दरअसल कलकत्ता के जिस किराए के मकान में भारत भूषण रह रहे थे, उसका मालिक बार-बार उन्हें अपनी पत्नी को लाने के लिए जोर डाल रहा था जबकि भारत भूषण तब तक कुंवारे थे, मगर उन्होंने मकान मालिक को अपने शादीशुदा होने की बात कही थी क्योंकि कलकत्ता में कुंवारों को खासकर किसी फिल्मी कुंवारे को कोई मकान किराए पर नहीं देता था. इसलिए भारत भूषण को यह झूठ बोलना पड़ा था. लेकिन उनको क्या पता था कि तेरह साल बाद ठीक 9 नवंबर 1954 को उनका यह झूठ वाकई में सच हो जाएगा और उनकी पत्नी उन्हें छोड़कर दुनिया को अलविदा कह देगी. घटना कुछ यूं हुई थी. भारत भूषण घरवालों की इच्छा के विरुद्ध जब मेरठ में अपना परिवार छोड़कर कलकत्ता फिल्म-नगरी पहुंचे थे तब कलकत्ता फिल्मी गतिविधियों का गढ़ हुआ करता था. कलकत्ता में भारत भूषण को फिल्म *चित्रलेखा* में छोटा सा रोल मिला था. हालांकि गए थे वे गायक बनने. फिर भक्त कबीर में हीरो भी हो गए. लेकिन रहने की समस्या उनकी तब भी नहीं हल हुई, क्योंकि तब आजकल की तरह किसी हीरो की एक फिल्म चल निकलते ही छप्परफाड़ दौलत की बरसात नहीं शुरू हो जाती थी. भारत भूषण को उस कंपनी में माहवार नौकरी भर मिली थी. तब हीरो-हीरोइन माहवारी पर ही नौकरी किया करते थे. काफी दौड़-भाग करने पर भारत भूषण को एक साहब ने मकान किराए पर देने की रजामंदी दिखाई लेकिन बीच में बिल्ली रास्ता काट गई. वह साहब पंजाब के रहने वाले अपने एक किरायेदार से खार खाए बैठे थे क्योंकि वह किराया दिए बगैर चंपत हो गया था. भला मेरठ का पंजाब से क्या वास्ता? लेकिन जब उन साहब को यह पता चला कि भारत भूषण मेरठ के रहने वाले हैं तो उन्होंने

मकान देने से साफ इंकार कर दिया. बेचारे भारत भूषण उनको समझाते ही रह गए कि मेरठ पंजाब में नहीं, उत्तर प्रदेश में है. मगर वह साहब शायद उल्टी खोपड़ी के थे. उन्होंने भारत भूषण की एक नहीं मानी. बेचारे भारत भूषण वहां से निराश होकर भटकते-भटकते एक अन्य मोहल्ले में पहुंचे जहां एक अच्छा मकान खाली था, लेकिन मकान मालिक की शर्त थी कि किराएदार शादीशुदा होना चाहिए. अब क्या करते भारत भूषण! फिल्मों में तो ऐसी विषम परिस्थिति आ जाने पर फौरन भाड़े की पत्नी हीरो साहब ढूंढ लाते हैं या अपने दोस्त की पत्नी को अपनी पत्नी बताकर मकान मालिक के सामने पेश कर देते हैं. पर भारत भूषण का फिल्मी सीन नहीं बल्कि सच से वास्ता पड़ा था. लेकिन थे तो वह भी हीरो ही इसलिए हीरो वाली ट्रिक का इस्तेमाल करते हुए मकान मालिक से उन्होंने झूठ बोल दिया कि उनकी बीवी मेरठ में है. मकान की दिक्कत के कारण उसे कलकत्ता अभी तक नहीं ला पाए हैं. उनकी यह ट्रिक काम आ गई. मकान मालिक बंगाली बाबू ने खुशी-खुशी मकान उनके हवाले कर दिया. थोड़े दिन बीते, अब बंगाली बाबू ने भारत भूषण को याद दिलाना शुरू कर दिया कि रहने की प्रॉब्लम तो हल हो गई, अब अपनी पत्नी को ले आओ ना! यानी अब शुरू हुई भारत भूषण के झूठ की असली परीक्षा. क्या करें, क्या कहें कि पत्नी रूपी बला से छुटकारा मिल जाए? कुछ दिनों तक वह झूठ पर झूठ यह बोलते रहे कि उनकी पत्नी बीमार है या पिताजी इतने बड़े शहर में उसे भेजने को राजी नहीं. लेकिन यह झूठ या बहाने भी कब तक चलते? बंगाली बाबू ने तो ठान ही ली थी कि वह अपने किराएदार की पत्नी को देखकर ही चैन लेंगे. इसलिए जब भारत भूषण छुट्टियों में मेरठ जाने लगे तो बंगाली बाबू ने उनको अल्टीमेटम दे दिया कि अब की आना तो पत्नी को साथ लेकर ही आना. बड़ी मुश्किल में जान फंस गई थी भारत की. क्या करें क्या न करें की उधेड़बुन में एक तरकीब सूझी. उन्होंने मेरठ पहुंचकर बंगाली बाबू को टेलीग्राम कर दिया कि उनकी पत्नी का देहांत हो गया है इसलिए एक महीना बाद ही आ सकेंगे. और जब एक महीना बाद वह कलकत्ता पहुंचे तो बेचारे बंगाली बाबू को भी उनकी काल्पनिक पत्नी के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करना पड़ा. परंतु भारत मन ही मन खुश होते रहे कि बंगाली बाबू की रोज-रोज पत्नी लाओ के झंझट से तो पीछा छूटा.

जब फल बरामद हुए ललिता पवार की गाड़ी से



कौन यकीन करेगा कि अक्सर फिल्मों में बुरी सास (डायन) का रोल करती दिखाई पड़ने वाली ललिता पंवार का भी जमाना था जब वह हीरोइन हुआ करती थीं और निर्माता-निर्देशक उनके नखरे झेलने को मजबूर रहा करते थे. मुंबई के ग्वालिया टेंक के पास स्थित ख्याति स्टूडियो अब खत्म हो चुका है. कभी वहां बड़ी चहल-पहल रहा करती थी. नामी फिल्मी हस्तियां वहां चहलकदमी करते हुए देखी जाती थी. वहीं पर धीरू भाई देसाई की फिल्म *नाग पंचमी* का सैट लगा हुआ था जिसकी हीरोइन थीं ललिता पंवार और हीरो थे साहू मोडक. कुछ जूनियर कलाकारों के साथ ललिता पवार, साहू मोडक और निरंजन शर्मा शूटिंग कर रहे थे. ललिता पवार ने धीरू भाई देसाई को बता रखा था कि दोपहर में वह लंच नहीं लेतीं बल्कि लंच की जगह केवल फलों से काम चलाती हैं. इसलिए उनके लिए फलों का इंतजाम किया जाए. भला उनकी इच्छा या आदेश को न मानने का साहस कोई कैसे करता? इसलिए अपनी फिल्म की हीरोइन के लिए धीरू भाई ने फलों का इंतजाम करवा दिया. रोजाना मैडम (ललिता पवार) के लिए टोकरे भर कर फल उनके लंच टाइम पर पहुंचने लगे. मैडम लंच ही फलों का करने लगीं. लेकिन इतने फल उनके पेट में कहां तक समा सकते थे. इसलिए शाम को शूटिंग से जब छुट्टी मिलती तो बचे हुए फल उनकी गाड़ी में लाद दिए जाते. यह रोज की बात थी. एक दिन फलों के ढेर पर धीरू भाई की नजर पड़ गई. उन्होंने अपने आदमी से पूछा--ये इतने फल स्टूडियो में किसलिए आते हैं? आदमी ने सहज भाव से उत्तर दिया--सेठ जी, यह फल तो आप की फिल्म की हीरोइन ललिता जी के लिए मंगाते हैं. उसकी बात सुनकर धीरू भाई झुंझलाकर बोले--अरे, मैंने तो ललिता जी के खाने के लिए फल मंगाने का इंतजाम किया था जबकि ये तो उनकी गाड़ी में भरे जा रहे हैं. उनके आश्चर्य प्रकट करने पर आदमी ने मामले का खुलासा करते हुए आखिरकार कह ही दिया--मगर सेठ जी, इतने फल वे एकबारगी तो खा नहीं सकतीं. इसलिए बचे हुए फल तो वे डेली अपने साथ शाम को वापसी घर ले जाती हैं. धीरू भाई ने अपना सिर पकड़ा लिया. उनकी समझ में सारा माजरा आ गया. थोड़ी देर बाद सहज होते हुए वह मुस्कराकर बोले--मुझे लगता है मैडम लंच ही नहीं, रात में डिनर भी फलों का ही लेती हैं. ठीक है जरा मेरी फिल्म पूरी हो जाने दो. तब देखूंगा फलों का लंच डिनर कैसे करती हैं.

भजिया खाते-खाते हीरो हो गए अशोक कुमार

अशोक कुमार उर्फ दादा मुनि जब बॉंबे टॉकीज में भरती हुए तो लेबोरेटरी असिस्टेंट के रूप में काम करने का मौका मिला. उस वक्त वे मिस्टर गांगुली के नाम से पुकारे जाते थे. अशोक कुमार और दादा मुनि तो बाद में कहलाए जाने लगे. मिस्टर गांगुली एक नंबर के कंजूस और अव्वल दर्जे के डरपोक माने जाते थे. उस जमाने में अभिनेता नजमुल हुसैन, मामा जोशी व दत्ता राम का बड़ा नाम था और आज के अशोक कुमार यानी मिस्टर गांगुली की उनसे अच्छी पटती थी. रोजाना शाम को इन लोगों की बॉंबे टॉकीज में महफिल जमती थी. हर आदमी दो दो पैसे जमा करता और उन पैसों से ढेर सारी भजिया मंगाई जाती. मिस्टर गांगुली की कंजूसी का आलम यह था कि भजिया खूब डटकर खाते और कीमत फूटी कौड़ी भी नहीं देते. एक दिन, कांटीन्यूटी

डायरेक्टर नजम नकवी ने मिस्टर गांगुली से कहा–यार गांगुली, तू गाता-वाता तो अच्छा है, हीरो के लिए क्यों नहीं ट्राई करता? हीरो बनकर कमाई भी अच्छी कर लेगा. नजम की बात सुनकर मिस्टर गांगुली ने ठहाका लगाया और व्यंग्य भरे लहजे में बोले–क्या बकता है तू? मैं ठहरा धोबी, हीरो कहां से बन जाऊंगा! दरअसल उन दिनों अशोक कुमार फिल्में धोने का ही काम किया करते थे, इसलिए अपने को फिल्मी धोबी कहते थे. लेकिन नजम ने अशोक कुमार की इस साफगोई पर भी हिम्मत नहीं हारी. वे उनके अंदर के छिपे हुए हीरो को जैसे जगाने पर तुल गए थे. नजम नकवी का साथ मामा जोशी भी देने लगे. मामा बोले–क्यों नहीं हीरो बन सकता तू? तू क्या किसी से कम है? देखने में हंड्रेड पर्सेंट हीरो लगता है. उस पर सोने पे सुहागा यह कि तू गाना भी बढ़िया गा लेता है. जरा गा के तो सुना कोई मुखड़ा. चुनांचे अशोक कुमार उर्फ मिस्टर गांगुली मामा जोशी के चढ़ाने पर झाड़ पर चढ़ गए और सुर-ताल के साथ जोर-जोर से गाने लगे. उनके साथी उनको दाद भी देने लगे. वहीं पर खुर्शीद भी बैठी हुई थीं जो गायिका के रूप में बड़ी मशहूर थीं. अशोक कुमार को गाना भी आता है और इतना अच्छा आता है, यह जानकर खुर्शीद को बड़ा आश्चर्य हुआ. उन्हें पहले मालूम भी नहीं हुआ था. एक दिन खुर्शीद ने अशोक कुमार को बुलवा भेजा लेकिन उनके इस बुलावे पर अशोक कुमार की हालत खस्ता हो गई. वे



अपने साथियों पर बिगड़ते हुए बोले–यार, तुम लोगों ने चक्कर में मुझे फंसा दिया. मैं कोई गवैया थोड़े ही हूं. अब देखना कितनी फटकर पड़ेगी मुझे. मगर खुर्शीद के बुलावे को अशोक कुमार टाल भी नहीं सकते थे. तब बॉंबे टॉकीज में खुर्शीद का बड़ा नाम हुआ करता था. खैर! अब तो सूली पर चढ़ना ही था. डरते-डरते अशोक कुमार खुर्शीद के पास जा पहुंचे जो उनको देखते ही मुस्करा उठीं. अशोक कुमार की जान में जान आ गई. वे तो यही सोच रहे थे कि खुर्शीद के सामने पहुंचते ही उनका काम तमाम कर दिया जाएगा. मगर यहां तो तस्वीर ही बदली नजर आई. अशोक कुमार का सारा डर काफूर हो गया. खुर्शीद ने उनसे कहा–तुम गाना गा लेते हो, यह पहले क्यों नहीं बताया? अशोक कुमार से कोई जवाब न देते बन पड़ा. शर्म से सिर झुकाकर मुस्कराने लगे. लेकिन खुर्शीद ने तो उनके बारे में कुछ तय ही कर लिया था. वे उन्हें देविका रानी के पास ले गईं और उन्हें हीरो बनाने की सिफारिश कर दी. बस, वहीं से मिस्टर गांगुली की तकदीर का सितारा जगमगाने को बेताब हो उठा. देविका रानी ने हिमांशु राय से अशोक कुमार के लिए सलाह-मशविरा किया और जब वहां से मि. गांगुली वापस हुए तो वह हीरो अशोक कुमार बन चुके थे. अपने भोजन वाले साथियों को जब यह खुशखबरी उन्होंने सुनाई तो सबने उन्हें कंधों पर उठा लिया. □